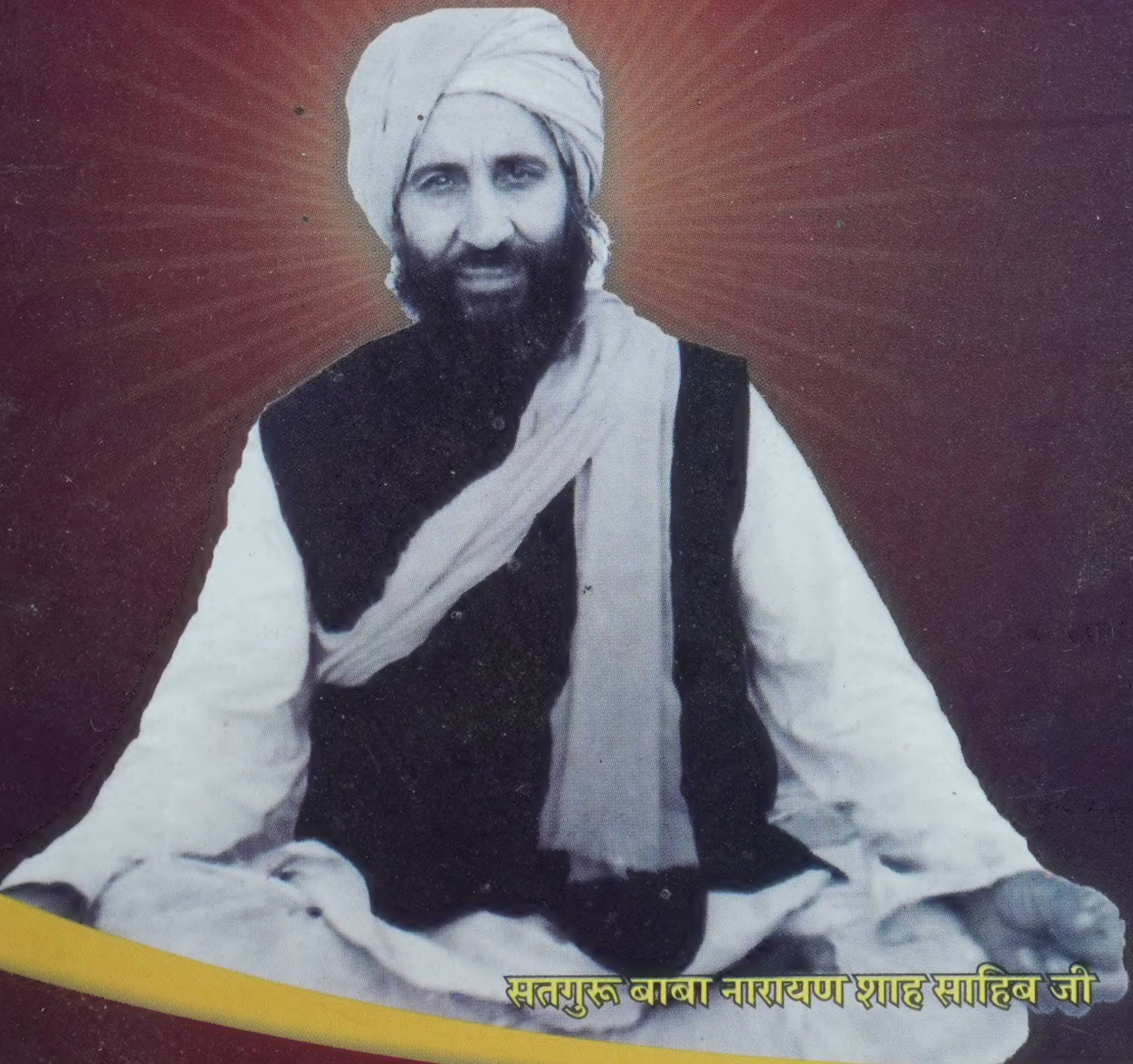
मासिक पत्रिका



हेरे माधव



संस्कार



सतगुरू बाबा नारायण शाह साहिब जी

वर्सी महोत्सव

◆ 9 - 10 अक्टूबर

।। हरे माधव दयाल की दया ।।



सतगुरू बाबा माधवशाह प्रवेश द्वार



सतगुरू बाबा नारायणशाह प्रवेश द्वार



सतगुरू बाबा गोविंदशाह प्रवेश द्वार



वर्ष : 8 पृष्ठ : 36 मूल्य : 10 माह : अक्टूबर 2011 अंक : 17
वार्षिक सेवा : 90/- 5 वर्ष सेवा : 400/-

विवरणिका

हरे माधव संस्कार (मासिक पत्रिका) - स्वत्वधिकार, स्वमित्व, प्रकाशक,
मुद्रक : हरे माधव परमार्थ सत्संग समिति, माधवनगर, कटनी (म.प्र.)
संपादक - दास मनोहर सुगानी
मुद्रण - सोलार ऑफसेट, जबलपुर (म.प्र.)
प्रकाशन हरे माधव सत्संग भवन सर्किट हाउस के पास, सतना (म.प्र.)
मो. : 9329941313, 9301361313

विनती सतगुरू जी के श्री चरणों में

हे सतगुरु जी, हे सच्चे पातशाह जी हम भूले भटके जैसे भी हैं आपके है हम विकारी दुराचारी पापों से भरे हैं हमने बहुत गुनाह किए हैं हम गुनाहों से भरे हैं अब आपकी शरण में आए है। आप हम नादानों को बक्श कर सत्य की राह प्रदान कर, हमें सत्य के मार्ग पर चलने का बल देवे। हे मेरे माधव हम जैसे भी है आपके है, हमारा रक्षक आपके सिवाय और कोई नहीं है, हमें केवल आपका ही आसरा है आपके ही भरोसे हैं। शरण पड़े की लाज आप सदा से रखते आए है आज भी इस नादान नासमझ नालायक पर दया करना मेरे दयालू सुहेणे सतगुरु सांई ईश्वर शाह साहिब जी कृपा करो, दया करो, रहमत धरो इस नादान सेवक की विनती स्वीकार करो सांई जी।

मैल छोड़ हम उजल होए,
संगत रज का ध्यान लगाएं।
तू अति पावन मेरे सतगुरु,
हम अति निर्बल मेरे सतगुरु।।
तू मेहर कर मेरे सतगुरु दाता,
हम भीख मांगे तुमसे सतगुरु दाता।

मेरे प्यारे सतगुरु जी हम मैले है आप उजल है, अपनी रहमत कर हमें भी उजल करें, दया के सागर हमारी दृष्टि खोटी है, मन काला है, जिव्हा विषयों के रस भोगों में लिप्त है कान निन्दा और खोटी मति की बाते सुनता है आप ऊंचो अति पावन पुनिता मेरे सतगुरु मीता, चरण कमल बसै मेरे चीता। बक्शो मेरे सतगुरु बक्शो मेरे गुनाहों को बक्शो आप सबके दाता अगम अपारा, करो कृपा अब हम नादानों पर आप दया कर कृपा करो मेरे सतगुरां हम शरण तेरी आए कृपा करो -कृपा करो....

वाणी संत सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी



इच्छा की मांग जीव को भिच्छुक बना देती है।।
निरइक्षक मांग जीव को निरक्षक पद है बताती।।
निरइच्छक मांग जीव को निरच्छक पद है बताती।।
इच्छा कारण ही जीव दुख कलेश कष्ट है पाता।।
इच्छा कारण ही जीव अधर्म में है लटक जाता।।
रोता सदा इक इच्छा के कारण।
डूबता मरता इक इच्छा के कारण।।
मन रे तूँ अब इक इच्छा कर सांची।
सतगुरू पूरे सिऊँलाओ ख्याति साँची।
नीच दास ईश्वर पर कृपा करो
इच्छा सगली अंतर तुम मेरो।।
हौमे दीर्घ रोग है एक संजम ते जाए।
हौमे दीर्घ रोग है एक सजम जाए।।

सिमरन

झूठ और निन्दा का सर्वदा के लिए त्याग कर दो

परमात्मा ने हम जीवों पर कृपा कर हमें यह नर तन दिया है इसी नर तन में स्वयं परमात्मा विराजमान है इसलिए इसे नर नारायणी देही भी कहा जाता है। अन्तरयामी परमात्मा अन्तर में समाया है, इसलिए इसे अन्तरयामी कहा जाता है। परमात्मा ने अपने मिलाप की युक्ति पूर्ण सन्तों के द्वारा हम जीवों को देते हैं सन्तजन हमें परमात्मा से मिलाप का सबसे सरल-सहज उपाय परमात्मा का अमृत तत्व नाम हमें प्रदान करते हैं उस अमृत तत्व नाम का सिमरन ध्यान हमें सतगुरू जी द्वारा प्राप्त युक्ति के अनुसार करना है।

परमात्मा के अमृत तत्व नाम को जपने अर्थात सिमरन ध्यान के लिए किसी समय स्थान का कोई बंधन नहीं है। इसका सिमरन ध्यान स्वांस-स्वांस करना है परमात्मा के अमृत नाम का सिमरन ध्यान करने वालों के लिए हिदायत है कि अपने अन्तर को पाक-साफ निर्मल रखे अपनी जबान, वचन वाणी व्यवहार की सावधानी रखें।

जिसे परमात्मा के अमृत तत्व नाम का सिमरन ध्यान करना है उसे सदा सर्वदा सत्य, निर्मल प्रेम भरी वाणी से अदब प्यार और सलीके से हितकारी वचन बोलने चाहिए जितना आवश्यक हो उतने ही वचन कहने है अनावश्यक वचन, निन्दा या प्रशंसा में अपनी वचन वाणी का उपयोग नहीं करना है भूल कर भी झूठा, बुरा या निन्दा का वचन अपने मुख से नहीं कहना और किसी का दिल न दुखाओं सिमरन करने वाले को वचन, वाणी, व्यवहार की पूरी सावधानी हर दम करनी है, झूठी जबान से जिह्वां की शक्ति हीन हो जाती है इसी वास्ते झूठ और निन्दा का सर्वदा के लिए त्याग कर दो।

जब सिमरन के वास्ते जीभ में ताकत न रही कैसे सिमरन होगा, कैसे

सेवा फलेगी और कैसे आवागमन जन्म-मरण से छुटकारा होगा। इसी वास्ते प्यारे भाई-बहनों ! हम सब बड़ी सावधानी से हर कदम फूंक-फूंक कर जगत में बर्ताव करें हम ऐसा आचरण व्यवहार करें जिससे सतगुरू जी की कृपा दृष्टि हम पर रहे उनकी कोप दृष्टि के भागी न बने हम कोई भी ऐसा कार्य न करें कि जिससे परमात्मा स्वरूप सतगुरू जी ना खुश हो जाए।

हम लोग जब दुःख पाते हैं तो यही सोचते और कहते हैं कि हमारा भाग्य ही ऐसा है हमारी चिन्ताएं नहीं मिटती हमारा कोई काम नहीं बनता तब हम कहते हैं कि अपनी जानकारी में ऐसा कोई औखा (खोटा) कर्म नहीं किया मेरे भाई-बहनों आपने वचनों की अवहेलना या निन्दा कर करके खुद इन दुःखों को न्यौता दिया है सन्तों के उपकार पूर्ण वचनों की तुमने मानी नहीं रोने की आदत बना दी निन्दा करने वक्त सोचा नहीं परिणाम भुगतने पड़ेंगे एक राई के बराबर की निन्दा के भी दुःख झेलने पड़ेंगे पूरे परिवार को कष्ट भोगने पड़ेंगे अब भी मौका है चेतो मेरे भाई चेतो जागो ! अगर आप वास्तव में दुःखों, कष्टों से छूटना चाहते हैं तो अपने सतगुरू द्वारा प्राप्त अमृत तत्व नाम का सिमरन-ध्यान नित नियम से स्वांस-स्वांस करो। सिमरन के सामान कोई दूसरा सरल उपाय नहीं है। अमृत तत्व नाम में सतगुरू की रुहानी शक्ति समाहित होती है इसी वास्ते वचन है-

'सर्व दुःख की औषध नाम'

इसलिए मेर प्यारे भाई परमात्मा के अमृत तत्व नाम का सिमरन-ध्यान स्वांस-स्वांस करो अपने समय का कम से कम 10 प्रतिशत समय सिमरन-ध्यान सेवा में सदउपयोग करने से दुःख चिन्ता मिटेगी अन्तर में प्रेम पैदा होगा अन्तर में परम आनन्द की प्राप्ति होगी, आवागमन का छुटकारा होगा जो मानव जीवन का मूल उद्देश्य है।

हरे माधव सत्संग के वचन

प्रेम चाहिए पाने के लिए "कुछ भी" खोने के लिए ईर्ष्या।
होश चाहिए गर हो कुछ जानना, अंजान के लिए बेहोशी।।

प्रसिद्ध के लिए बोलना है जरूरी, सिद्धि के लिए सर्फ खामोशी? होशियारी नहीं होश चाहिए मेरे भाई! सफलता के लिए आलस्य नहीं जोश चाहिए। करो, करो! तुम सब करो, पर पहले अपने आपको मुक्त करो, तुम सब करो लेकिन द्वैत से उठकर करो और वही सब कुछ करो, जो कि जीवन में सभी करते हैं तुम भी करो मेरे भाई, करो मगर पूरे होश से, जोश भी हो तो पूरे होश के साथ, खुशी भी हो पूरे होश के साथ, पूरा जीवन जीयो इसी होश के साथ, और फिर जब मरो तो मरो भी पूरे होश के साथ, इतना ही कुल परिश्रम है, पूर्ण संतों का हमें जगाने का कुल मालिक सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी ने ''जगाया रोजाना अमृत वेले नाम का होका देकर ही'', परम मौज के मालिक सर्वकला समरथ संत सतगुरू सांई नारायणशाह साहिब जी ने फरमाया कि ''जीयरे सेजा मौत को समझ पहले फिर हर हाल में खुश रहो, हर हाल में खुश'' जीवन का सबसे, सबसे गहरा सत्य है, तुम्हारा चेतन, ''योर अवयरनेस'' ओनली फार योन अवयरनेस''।

यह जो इंसान का शरीर याने कुदरती काबा है, इसमें उस मालिक ने अपने सहित क्या-क्या रखा है, फरमान है यह सतगुरू बाबा अमरदास जी महराज का कि-

इस काया अंदर वसतु असंखवा, गुरमुख साचु मिले ता वेखवा।
नउ दरवाजे दसवै मुक्ता अनहद सबद सुणावणिआ।

वचन है कि पारब्रम्ह जिन सच कर पाता, नानक सो जन सच समाता और यह अवस्था उसे ही मिलती है ''गुरू किरपा जे नर के कीनी ते ऐ जुगत पछानी नानक लीन भयो गोविन्द सिउं पानी संग पानी।''

एक सुरत शबद अभ्यासी को अपनी मौत के समय इतनी खुशी

होती है जितनी की ब्याह में भी नहीं होती क्योंकि तब उस अभ्यासी का अपने प्यारे नूरानी रूप सतगुरू से सदा के वास्ते मिलाप हो जाता है। 1 अक्टूबर 1985 को सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी नूरानी रूप में प्रकट होकर सर्वकला समरथ संत सतगुरू शहंशाह साँई नारायणशाह साहिब जी से बोले कि ''भाई प्रभा, इस पूर्ण रूप की अब मौज लीला समेटो 10 अक्टूबर 1985 को हमारे साथ चलकर निज धाम में आनन्द मनाओ।'' यह सुनकर सतगुरू साँई नारायणशाह साहिब जी ने वेनन्ती करी कि- ''हे! सच्चे पातशाह जी मुझे अभी चलने की आज्ञा फरमाइये'' यह सुनकर कुल मालिक सतगुरू बाबा माधव शाह साहिब जी ने बड़े ही प्यार से फरमाया कि- ''भाई! प्रभा आपको सभी कार्यों को सुचारू रूप से अंजाम देकर चलना है, ताकि अपने वाले वक्त में संगत और सेवा का दायरा बढ़ने पर प्यारे सिख सेवक अच्छी तरह तैयार हो सकें और परमार्थ का पूरा कार्य 20 वर्ष में **''हरे माधव''** नाम का अपना रंग जब दिखायेगा जो सारे संसार को रौशन करेगा। उसके वास्ते अभी आपको 10 दिन की सेवा और खुशी-खुशी करनी है।''

सतगुरू साँई नारायणशाह साहिब जी ने सतगुरू जी का हुकुम भी पूरा किया और हम जीवों पर और भी अनन्त उपकार उन दस दिनों में आपजी ने किये ''जियरे सेजा मौत को समझ पहले फिर हर हाल में खुश हाल में खुश''।

ये हमेशा याद रहे कि ''इस पथ के हर राही का विश्वास अलग है, सबका अपना-अपना है प्याला, और अपनी-अपनी प्यास अलग है, जीवन के सब चौराहे खण्डहर पर मिलते है, पतझड़ तो है सबका एक। महज मधुमास अलग है, अंतरमुख होते ही सन्मुख रह जाता परिवेश नहीं बिना ध्यान (होश) के है, हर क्रिया अधूरी, बन पाता परिवेश नहीं।

परम संत गोस्वामी तुलसीदास जी ने हमें सख्त हिदायत करी है, आत्म उद्धार की प्रेरणा देते हुए कि-

ब्रम्हज्ञान जान्यो नहीं, कर्म दिये छिटकाय।
तुलसी ऐसी आत्मा, सहजे नरक में जाय।।

आज के इस शब्द में कुल मालिक स्वरूप सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी हम भूले भटके जीवों को गफलत की नींद से जगाते हुए संतमत का होका प्रदान कर रहे हैं कि चेतो चेतो सतगुरू के प्यारो सतगुरू ने हर बात तेरे भले की कही है। सभी जीवित जाग्रत पुरुषों का सारी दुनिया के वास्ते यही फरमान है कि ''जो जीवन को लक्ष्य मान लेता है वह दुनिया में भटक जाता है, यह मनुष्य जीवन को एक परम दुर्लभ अवसर है सब कुछ जानने का, कुछ पाने, का यह लक्ष्य नहीं है। यह तो मार्ग, जिसे रुहानी मार्ग कहते है, यह मंजिल नहीं है। इसके द्वारा कहीं पहुंचना है, केवल जीवित होने से ही मत समझ लेना कि बस! पहुंच गए। ज्ञानी हो गए, ध्यानी हो गए सब जान लिया।

यह जीवन कोई सिद्धि नहीं है, यह तो एक प्रक्रिया है, अब इससे जो ठीक से गुजरे तो ही पहुंचेगा जो ठीक से न गुजरे तो वह भटक जाएगा, जीवन को ही जो सब कुछ मान लेता है और सोचता है कि ''एह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा'' वही नास्तिक है और जीवन के पार पहुंचने की जिसके पास मंजिल है वही आस्तिक है। उसी के लिए है जाग्रत पुरुषों का सत्संग, सेवा, सिमरन और ध्यान की आवश्यकता! वह गुरमुख है, जो इस अंतर की यात्रा का भेद पाना चाहता है और जो बाहर ही बाहर भटके वही मनमुख है, और इस दुनिया में दोनों ही रहते हैं, एक समान होकर भी अलग-अलग, कुल मालिक पूर्ण पुरुष सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी अपनी परम निर्भीक वाणी द्वारा सारी दुनियां के लोगों डंके की चोट पर ऐलान करते हुए जाग्रत अवस्था का ब्यान करते हुए जगाते हैं। कृपया होशपूर्वक सुनने समझने और अमल करने की कोशिश करें कहते है कि ''बात अगर हक है तो उसे कबूल कर लो यह न देखों कि कहता कौन है, हम जीवों की बेहोशी की हालत देखकर ही जाग्रत पुरुषों ने ऐसे वचन हमें होश में लाने के वास्ते फरमाये है, आपजी फरमा रहे है।

वाह वाह वाह दुनियां की दुनियादारी।
सबै भूलें है जग में क्या नर और क्या नारी।।
दही शक्कर लगा पाथर को खूब मलै।
खूब करत बुहारी मनुआ जुग जुआरी।।

कुल मालिक सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी परम मौज में आकर इस दुनियां की रीत और दुनियादारों की परतीत तथा सब नर नारियों को मनमाया के भुलावे में पड़ा देखकर फरमाया कि ''वाह वाह वाह दुनियां की दुनियादारी, सबै, भूलें है जग में क्या नर और क्या नारी।। दही शक्कर लगा पाथर को खूब मलै, खूब करत बुहारी मनुआ जुग जुआरी, बड़े ही सुंदर एवं अनमोल वचन है, आप सच्चे पातशाह जी के जो हम होशियार दुनियादारों की करनी देखकर फरमाये गए है कि कबूतर कैसी होशियारी छोड़ो कबूतर आंख मूद कर सोचता है बिल्ली या बाज से बच गया नहीं, अरे! बन्दर तू तो मदारी काल के चक्कर में फंस गया। कि वाह वाह वाह रे दुनिया और दुनियादारों सबके सब भूले कर रहे हो पर तुम्हें पता ही नहीं चलता, बाहरमुखी होकर वक्त जाया कर रहे हो, अपने मनुष्य चोले की तुम्हें कीमत का अन्दाजा ही नहीं है, बाहरमुखी होकर चाहे आज अपने मिट्ठी से बने शरीर को न जाने किस-किस तरह से सजाते हो या बाहरमुखी वृत्ति द्वारा मनचाही पूजाएं दही शक्कर जड़ पदार्थों को भोग लगाकर सोच लेते हो कि हमने मरने के बाद स्वर्ग में अपना स्थान बुक कर लिया, बाहरमुखी कितनी साफ-सफाई करते रहो पर तुम्हारे जुआरी मन में कितने जन्मों का मैल जमा है, उधर तुम्हारा ख्याल ही नहीं है।

।। हरे माधव दयाल की दया।।
परमात्मा को पाना चाहते हो तो
आत्मा को जगाओ, आत्मा जागेगी
आत्म शबद के सिमरन ध्यान से।

कख हेंठा लख पयो अथव

सर्वकला समरथ पूर्ण संत सतगुरू सांई नारायणशाह साहिब दरबार में आई संगत को अक्सर फरमान देते भाई माता-पिता की सेवा करो, जिसने जन्म दिया है उसकी आज्ञा में रहो, उनका आदर सम्मान करो भाई-भाई के लिए संदेश देते एक-दूसरे में विवास रखो, हक हलाल की कमाई करें।

कख हेंठा लख पयो अथव

अर्थात विश्वास रखोगे तो तिनका भी लाख बन जाएगा। यह भी हिदायत देते एकता प्रेम और विश्वास रखोगे तो रस्सी से, उड़ते पक्षियों को भी पकड़ सकते हो, भाव यह कि न होने वाला कार्य भी हो जाएंगे, मतभेद हो परन्तु मन में भेद नहीं हो, अर्थात मत अलग-अलग हो सकते हैं, विचारों का आदान-प्रदान हो, किसी बात को लेकर अन्तर मन में गांठ न लगाएं, नफरत, निन्दा को अपने अन्दर में जगह न दें नहीं तो आप स्वयं ही अस्वस्थ हो जाएंगे, आपका ही विकास रुक जाएगा। चूल्हा-चौका अलग हो परन्तु दिल अलग नहीं होने चाहिए।

हाजिरां हुजूर पूर्ण संत सतगुरू सांई ईश्वरशह साहिब जी का फरमान जिस घर-परिवार में आपस में प्रेम है, जहां विश्वास है, जहां बड़ों का आदर-सम्मान होता है, छोटों को प्यार मिलता है वह परिवार तो स्वर्ग से भी बढ़कर है स्वर्ग कही असमान या जमीन के अन्दर नहीं है अपके व्यवहार, अपकी वाणी, आपके विचारों में ही स्वर्ग तथा नर्क छिपा है, मनुष्य का शान्ति में रहना स्वर्ग है तथा अशान्ति में जीना नरक है आप साहिबानजी ने फरमाया जिस घर में तत्व नाम का सिमरन होता है वह बैकुंठ से भी बढ़कर है आतम शबद नाम के सिमरन-ध्यान करने वाले साधक के हृदय में देवी-देवता वास करते हैं। इसी आतम शबद का सिमरन-ध्यान करने के लिए सभी देवी-देवता भी इन्सानी योनी का इन्तजार करते हैं।

जिस देही को सिमरै देव, सो देही भज हर की सेव

बड़े भाग्य से मनुष्य तन मिलता है। स्वर्ग, नर्क, बैंकुठ सब यहीं पर है। इस सुअवसर का लाभ उठाएं।

शिष्य की असल दीपावली

सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी, सतगुरू बाबा नारायणशाह साहिब जी के अमृत वचन-

"सतगुरू पुरुख दयाल, खिन्न-खिन्न करत निहाल"

का खुलासा करते हुए फरमाते हैं कि पूर्ण संत अपनी संगत (शिष्यों) को सत्संग के माध्यम से अखण्डता का तत्व प्रसाद देकर उनके सोए विवेक को जगाकर भ्रम के जाल से मुक्त कराते हैं, जिससे संगत अखण्ड पूर्ण प्रकाश में मिलाप कर सके। पावन पर्व गुरू पूर्णिमा शिष्यों के लिए "**गुरू**" सूरज-चाँद जैसा पूर्ण है, जिसके उदय होने से घनघोर काली रातें खत्म हुई। "**पूर्णिमा**" रूप चन्द्रमा सतनाम रूप सतगुरू के संग रूहें प्रेम रंग में रंग कर धीरे-धीरे जग गई हैं। अन्तर प्रकाश का उदय हो गया शिष्य की असल दीपावली हो गई।

पूर्ण संतों का स्वभाव सहज व सरल होता है, वे मन, वचन कर्म से सदा सर्वहित परोपकार ही करते हैं। वे एक अनेकता के अन्दर अजीब निराले ढंग से उस परम तत्व एकत्व की पूर्णिमा से हमें मिलाते हैं। वे परम दयालु दातार, सदैव बुरों के साथ भी भलाई करने को आतुर रहते हैं। प्रभु सतगुरू की किसी मौज को समझ पाना हम मनमुख इन्सानों की पहुंच से परे है। वे अथाह, अनन्त, अहनिश, अनामी के मालिक-ए-कुल हैं। वे सभी से एक समान प्रेम करना सिखाते हैं। खुद भी उसी समता भाव में रहते हैं, सभी पर समान दया दृष्टि रखते हैं।

सतगुरू तो परम अथाह दया रहमत की बारिश अपने अमृत वचनों के माध्यम से करते हैं और हमारे हृदय की मलीनता एवं कुसंगति को हटाकर अंतर के कपाट खोलने की हिदायत देते हैं। जो रूहें सतगुरू वचनों को धारण करके अपने विषय-विकारों एवं अहंकार को जलाकर नष्ट करते हैं, उसी के अन्तर का अंधकार नष्ट होकर परम प्रकाश प्रकट हो जाता है। फिर उस जीव के मोहमाया के जाल जल जाएंगे और उसकी आत्मा परमात्मा के एकत्व प्रकाश की पूर्णिमा सर्वत्र पा सकेंगे।

सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी फरमाते हैं कि जब तक हमारे अंतर हृदय में ज्ञान के प्रकाश का सूर्योदय नहीं होगा, तो अंतर का अंधकार कैसे नष्ट होगा, पूर्ण संत सतगुरू की दया रहमत सदा बरस रही है, उसको शरणागत शिष्य ग्रहण कर पाते हैं। पूर्ण संत पारस की तरह होते हैं, जो उनके साथ जुड़ जाए वह पारसता को पा सकता है। पूर्ण सतगुरू की शरण में दीनता, नम्रता धारण कर सेवा, सिमरन, ध्यान, सच्चा प्रेम कर अंतरमुखी साधना में अपने को साधे तो पूर्ण सतगुरू ही हर मोज अथाह वात्सल्य करुणा से परिपूर्ण हो जाता है। उसके अंतर का अज्ञान दूर होकर अंतर में ज्ञान का प्रकाश भर कर संत जन सत्य का हुनर सिखा देते हैं।

जिस तरह पूर्णिमा की चाँदनी सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने में अपना प्रकाश व शीतलता बिखेरती है, उसी प्रकार धरती, नभ, फूल, पत्तों सभी में उस परम साहिब माधव पुरुख की झलक दिख रही है। वह एक पल में परम तत्व परमात्मा से मिला देते हैं, क्योंकि अमृत तत्व नाम वह जरिया है, जिसके सिमरन ध्यान से परमात्मा को पाया जा सकता है। तत्व नाम का भेद व उसके सिमरन की युक्ति सतगुरू ही हमें प्रदान कर सकते हैं। हमारे अन्दर अमृत भी है, विष भी है, पूर्ण संत अमृत को पाने की युक्ति अमृत तत्व नाम के सिमरन, ध्यान के द्वारा प्रदान करते हैं। अगर शिष्य अपने अंदर मौजूदा सतगुरू के साटिक ध्यान में मग्न रहता है, तो वे उसको निहाल कर देते हैं। पूर्ण सतगुरू का साटिक ध्यान करना उस साहिब-ए-मालिक के दर्शन करने के तुल्य है। परम शबद नाम के नित नियम से अभ्यास करने से अन्तर जगमगा उठता है वही असल आन्तरिक दीपावली है।

सदा खुश रहना चाहते हो तो परमात्मा की हर एक रजा में राजी रहने की आदत डालो

परमात्मा निष्काम प्रेम करने वालों को प्राप्त होते हैं

सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी फरमाते हैं कि जो जीव परमात्मा के रुहानी प्रेम से भीगा हुआ है और उसे सतगुरू पूरे का प्रेमतत्व मिला हुआ है उस जीव को रुहानी प्रेम की राह में किसी प्रकार की बाधा या रुकावट नहीं आती। जो प्रेमी आत्मा परमात्मा के अभेदी रहस्य की जानकार है, वे फिर समदर्शी-निर्दोषदर्शी हो गए हैं क्योंकि उन्होंने सतगुरू (मालिक) से प्रेम की आँख, प्रेम का अमृत पा लिया उन्हें फिर मिथ्या लफ्जों के दोष दिखाई नहीं दे। मालिक की कृपा से जिनकी आत्मा रुहानी प्रेम प्रसाद और सच्चे रंग में भीगी है उसे मालिक अपने रंग में रंग देता है जैसे फूलों की खुशबू हमारे चाहने या न चाहने पर भी खुशबू बंद नहीं कर देती फूलों के बगल से जो भी निकलेगा वह अपनी खुशबू से अपनी महक से उसे सराबोर कर देता है। सन्तजन हमें परमात्मा के तत्व नाम, प्रेम से जोड़कर रुहानियत असल हकीकत से मिलाना चाहते हैं। जिससे जीवात्मा निर्मल-पावन होकर सत उन्नति प्राप्त कर सके।

जब रूह मालिक, सतगुरू के चरण शरण, सोहब्बत में टिकती है तो उनका रुहानी प्रेम विरह, दया, करुणा धीरे धीरे आत्मिक निजता को प्राप्त करती है। आज इस युग में रोटी-कपड़ा-मकान ये सारी चीजों तो भरपूर हैं किन्तु आत्मिक प्रेम का आभाव है घर में प्रेम नहीं समाज के प्रति प्रेम नहीं है, परमात्मा तो प्रेम करने वाले प्रीतवंतों को प्राप्त होते हैं, जिसके अन्तर में निष्काम प्रेम है सच्ची भक्ति है परमात्मा उन्हें ही प्राप्त होते हैं। सन्तजन रुहानी-आत्मिक प्रेम से लबालब पूरे आला मुर्शिद विद्वान होते हैं वे आपके जीवन में भी रुहानी प्रेम, करुणा की निगाह से संवार कर आपके जीवन में बहार लाना चाहते हैं, इसलिए मेरे प्यारे भाई उनके अमृत वचनों को सहज-सरलता से शिरोधार्य करो।

सतगुरू सांई ईश्वर शाह साहिब जी फरमाते हैं कि रुहानी प्रेम खरीदा या बेचा नहीं जाता क्योंकि यह दौलत तो आत्मा रूपी फूल और खुशबू

रूपी पावन प्रेम की तरह है इसके माली होते हैं पूरे आला सतगुरू। हे प्यारे भाई जब तक साध-संगत का प्रेम आपके हर विचार आपके दिनचर्या में न समा जाए तब तक आपके जीवन में सूनापन, खालीपन, शोक-अशोक के संगीत बजते रहेंगे, ये हम अपने अन्दर समझ सकते हैं। परमात्मा ने अपनी अंश (आत्मा) देकर हमें सदा अपने से जोड़े रखा है, वह कभी भी हमसे जुदा नहीं है (जो होता नहीं जुदा उसे कहते हैं खुदा) वह अवंशी रूप होकर भी तत्व रूप एवं तत्व नाम में समाहित है, इसलिए संतजन हमें सदा प्रेमभाव से रहने की सीख देते हैं। हे प्यारो आपस में प्रेम का भाव रखो पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों एवं प्रकृति से भी प्रेम का भाव रखो हम है कि जगत की नाशवंत चीजों से प्रेमकर विकारों में फंस जाते हैं वे हमें देते हैं सच्ची बहूमूल्य दौलत हम है कि कोड़ियों की मोल की वस्तुएं बटोरने में बिखर जाते हैं। हम जब प्रेम भाव रखेंगे परमात्मा के तत्व नाम का सिमरन ध्यान करेंगेतो हमारे अन्तर में बैठा अप्रकट परमात्मा जो हमें सत्य-असत्य का संकेत करता है कि यह सही है यह गलत है यह भेद हमें साध संगत सत्संग से जुड़ने पर प्राप्त होगा और सतगुरू कृपा से परमात्मा कि परम शबद नाम की प्राप्ति और उसके सिमरन की युक्ति प्राप्त होने पर आपके अन्तर में रुहानी प्रेम का नशा चढ़ जाएगा और आपको ज्ञात होगा सर्वव्यापक नूर हरे माधव की यह सारी रचना है हम सब उस महासागर की नन्हीं बूंद है।

अपने स्व को जानने का प्रयास करें

कुल मालिक फक्कड़ मौला पूर्ण संत सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी का फरमान अपने स्व को जानने का प्रयास करें कि

हम क्या है ? हमारा मन क्या है ? आत्मा क्या है ?

परमात्मा क्या है ? सतपुरुष क्या है ?

आप साहिबान बड़े ही सरल सहज तरीके से प्रश्नों के उत्तर फरमा रहे हैं, हम जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश पाँच तत्वों से बने हैं, छठवां परमतत्व आत्मा का हमारे शरीर में वास है, जो शबद रूप है। हमारा अपना शरीर में कुछ भी नहीं है, हम अपने ही चेहरे से अनजान हैं। ना रोग, ना शोक, ना बुढ़ापा, ना ही मृत्यु हमारे वश में है, जब तक स्वांस चल रहे हैं, शरीर में चैतन्य आत्मा का वास है, तब तक जीव है, शरीर में प्राण रहने तक ही हमारा अस्तित्व है, चैतन्य आत्मा के शरीर में रहने तक हम स्व को जान सकते हैं। हमारे शरीर में दस द्वार हैं, नौ द्वार खुले हुए हैं तथा दसवां गुप्त द्वार है वह दोनों नैंनों के मध्य स्थापित है जो केवल परम शबद नाम के सिमरन ध्यान से ही खुलता है हमारा शरीर स्वासों से चलता है इसकी जरूरत भूख, प्यास, नींद है जिसकी मात्रा निश्चित है शरीर में रोग शोक आते हैं जो हमारे ही कर्मों के फल होते हैं।

हमारे शरीर में मन है जो हमारा ही मित्र भी है तथा शत्रु भी है पाँच वरदान काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मन के कारण ही विकार बने हुए हैं मन एक पल भी शान्त नहीं रहता इसकी इच्छाएं अनन्त हैं यह कभी तृप्त नहीं होता है। मन के कारण ही हम अनेक चिन्ताओं से घिरे हैं, दुखी है।

हमारे शरीर में छठवां परमतत्व आत्मा है जो परमात्मा की अंश अजर-अमर अविनाशी है, आत्मा हर कर्म की दृष्टा है, इसकी चाहत

अपने अंशी परमात्मा का सिमरन ध्यान करना है आत्मा ही सभी के प्राणों का आधार है सभी शरीर आत्मा के वस्त्र हैं।

सारी सृष्टि का रचनाकार परमपिता परमात्मा है पाँचों तत्व जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश की उत्पत्ति उसी के हुक्म से हुई है तथा परमात्मा के इशारे से चलती है परमात्मा निर-आकार है सभी आकारों में आत्मा अंश के रूप में एक समान वास करता है, परमात्मा अनुभव है जिसका अनुभव अपने ही शरीर में नाम भक्ति से ही संभव है।

आप साहिबान फरमाते हैं कि तन, मन, आत्मा, परमात्मा की जानकारी ज्ञान की श्रेणी में आता है, आज संसार में ज्ञान की कमी नहीं है, ज्ञानी जन आत्मा परमात्मा के विषय पर खूब ज्ञान चर्चाएं करते हैं, परन्तु आत्मा का परमात्मासेएकाकर होने की युक्ति बताने वालों की कमी है, मनुष्य के मूल चैतन्य धर्म बताने वालों की कमी है, जिन पूर्ण सतपुरुषों ने अपने ही निज घर में परमात्मा का अनुभव किया, वही उसका भेद बताने की सामर्थ्य रखते हैं, परमात्मा निर-आकार तत्व रूप में हर एक घट में समाया है, परमात्मा शबद नाम की साधना से ही हर एक मनुष्य अपने शरीर के अन्तर में अनुभव कर सकता है।

पूर्ण सतपुरुष ही आत्मा का परमात्मा से मिलाप, शत्रु मन को मित्र बनाने की कला, दुःख सहने की शक्ति की युक्ति परमात्मा के शबद नाम की भक्ति का भेद पूर्ण सतपुरुष ही प्रदान करने में समर्थवान होते हैं पूर्ण सतपुरुष को खोजना कठिन है, उनमें विश्वास कर उनके वचनों पर अमल करना कठिन है क्योंकि पूर्ण सतपुरुष हमारे जैसे ही इन्सान है, काल माया के भुलावे में पड़कर हम उन्हें अपने जैसा ही समझने की भूल करते हैं, जबकि पूर्ण सतपुरुषों का उद्देश्य मानव का उद्धार करना होता है समाज में प्रेम, भाईचारे का संदेश देते हैं निःस्वार्थ सेवा का सलीका, परमात्मा के तत्व नाम सिमरन, ध्यान का भेद प्रदान करते हैं, पूर्ण सतपुरुष निःस्वार्थी बिना किसी भेदभाव के सभी को शुभ एकता, समता, प्रेमा भक्ति, कर्म तथा मूल धर्म का मार्ग दिखाते हैं।

मनुष्य जीवन परमात्मा की अनमोल सौगात है

पूर्ण सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी मनुष्य जीवन सफल बनाने कुछ अनमोल नसीहतें फरमा रहे हैं-

जो मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में अपने आप पर नियंत्रण रखता है, जिसका आत्मबल मजबूत है, स्वयं पर विश्वास है वही सच्चा शूरवीर है। जो मनुष्य दूसरों में केवल गुण ही देखता है दूसरों की निन्दा नहीं करता है, केवल खुद को समझाने स्वयं को संवारने का प्रयास करता है उसी का जीवन शांत रहता है। जिस मनुष्य की अपने कर्मों, अपने व्यवहार, अपनी वाणी पर कड़ी निगाह रहती है, किसी का दिल नही दुखाता वही सच्चा गुरुमुख पुरुष है। जो मनुष्य किसी को दोष न देकर, कड़वे और मीठे फल अपने ही किए गए कर्मों का फल जानकर सहर्ष स्वीकार लेता है, वही संतोषी पुरुष है। जो मनुष्य सुख दुःख में विचलित नहीं होता समता में रहकर हर हाल में सतगुरू नाम आत्म शबद का सिमरन करता है, वही पुरुष मुक्ति का अधिकारी है।

आप साहिबान बड़े प्यार से समझाते है- हे भाई इस दुनियां में किसी की जिन्दगी में न कभी सदा सुख रहा है ना ही सदा दुःख रहा है। लाभ-हानि, स्वस्थ-अस्वस्थ, मान-अपमान यह सब काल माया है। जन्म एवं मृत्यु निश्चित है नए लोग नए चेहरे आते हैं पुराने लोग कभी नहीं आते कोई ऐसा घर-परिवार नहीं जहाँ आपस में बर्तन न टकराते हों। सदा स्वयं को समझाएं औरों के गम देखेंगे तो आपके गम औरों से बहुत कम दिखाई देंगे। होनी ही होती है अनहोनी कभी नहीं होती, रोकर या हंसकर यह जीवन तो जीना ही पड़ेगा।

हे गुरुमुख पुरुषों आपके जीवन में बदलाव आए, गमों की जगह खुशी आए, अशान्ति के बदले शान्ति आए, मनुष्य जीवन परमात्मा की अनमोल सौगात है स्वांस-स्वांस तत्व नाम का सिमरन ध्यान करते रहें, अपने आप अचिंत हो जाएंगे। हर हाल में खुश रहें, सदा मुस्कराते रहें, इसी का नाम जिन्दगी है। जीवन से सदैव हंसते, मुस्कराते रहें किसी का दिल न दुःखाएं। खुशहाली अपने आप आपके पास आएगी। सदा परमात्मा में विश्वास रखें, परमात्मा के न्याय में संदेह न करें। हर दर्द की एक ही दवा है परमात्मा के तत्व नाम का सिमरन।

इक पल बिसरे तो कल युग होता

कुल मालिक शहंशाह पूर्ण संत सतगुरू बाबा माधवशाह साहिब जी परमात्मा की खोज बाहर करने वाले मनुष्यों के लिए अपना निज अनुभव यूं बयां कर रहे हैं हर एक जीव प्राणी का शरीर परमात्मा की अंश चैतन्य आत्मा के कारण ही क्रियाशील है। आत्मा अंश के शरीर से निकलते ही शरीर चेतनाहीन हो जाता है मृत हो जाता है जब तक शरीर में प्राण है जब तक शरीर में चैतन्य आत्मा का वास है स्व को जानने का प्रयास करें, परमात्मा के सच्चे परम शबद नाम का सिमरन ध्यान करें।

सिमरन कर ले मेरे मना, तेरी बीती उम्र हरी नाम बिना

आप साहिबान फरमाते हैं कि परमात्मा को पाना उस साधक के लिए अति सरल है जिसको परम शबद की युक्ति पूर्ण सतगुरू से मिल जाए, परमात्मा का अनुभव एक क्षण एक पल में किया जा सकता है। परमात्मा का अनुभव जितनी देर गाय के सींग पर राई का दाना ठहर जाए उतनी देर चित में परम शबद याद आए तो परमात्मा की अनुभूति सम्भव है अगर उतनी देर चित से परम शबद भूल जाएं तो चित में जगत फंसता है।

इक पल बिसरे तो कल युग होता

परमात्मा अति-निकट से निकट है शरीर की बांह भी आपसे दूर है वह उससे भी निकट है बल्कि अन्तरयामी परमात्मा हर किसी के घट के भीतर ही चैतन्य अंश आत्मा के रूप में अन्तर में ही समाया है। कोई भी जीव प्राणी चैतन्य आत्मा के बगैर नहीं है।

लोगों ने परमात्मा को मूर्ति या खिलौना समझा है परमात्मा को अपने पांच तत्वों से बने कुदरती मंदिर को छोड़कर बाहर ही बाहर तलाश कर रहा है याद रखना भाई संसार के जितने भी पवित्र स्थान हैं वह परमात्मा को याद करने के वास्ते बने हैं। परमात्मा की अनुभूति जिनको हुई है वह अपने निज कुदरती मंदिर में ही हुई है।

काहे रे बन खोजन जाई सर्व निवासी सदा अलेपा तुम्हरे संग समाई।

मन अनन्त इच्छाधारी है

आत्म शबद के भंडारी तत्व नाम के दाता दानी पूर्ण संत सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी फरमाते हैं-

ऐ परमात्मा के सबसे प्यारे पुत्र इन्सानों खुदा के नेक बंदों, अगर खुदा को पाना चाहते हो तो खुदी को मिटाओ, खुदी मिटेगी तभी खुदा प्राप्त होंगे। खुदा की नमाज अदा करने पर खुदी मिटेगी।

परमात्मा को पाना चाहते हो तो आत्मा को जगाओ आत्मा जागेगी आत्म शबद के सिमरन ध्यान से।

रामजी को पसंद आना चाहते हो तो छल, कपट, विकारों को त्यागो, निर्मल जन रामजी को प्रिय हैं।

सदा खुश रहना चाहते हो तो परमात्मा की हर एक रजामें राजी रहने की आदत डालो।

शान्ति चाहते हो तो, औरों के अवगुण देखना छोड़ दो, औरों को समझाना छोड़ो, स्वयं गम खाओ, स्वयं को समझाओ, स्वयं के अवगुण देखो।

आवागन के बंधनों से मुक्त होना चाहते हो तो,

संसारी पदार्थ मांगना छोड़ दो, राज, मुक्ति की भी चाहत न रखें, केवल तत्व नाम की निःस्वार्थ साधना करो।

पवित्र आत्माओं से पुकार की, राज न चाहूं, मुक्ति ना चाहूं, चरण कमल की भक्ति चाहूं, आत्म शबद, तत्व नाम, खुदाई कलमे का भेद पूर्ण कामिल रहबरे रहमान मुर्शिद से मिलेगा, वक्त के हाजिरां पूर्ण संत सतगुरू से रुहानी राज मिलेगा, आत्मा के जागने पर ही चंचल मन वश में होगा।

आत्मा और परमात्मा के मिलाप में सबसे बड़ी रुकावट मन है। मन अनन्त इच्छाधारी है, मन कभी तृप्त नहीं होता चाहे तीनों लोको की संपदा क्यों न मिल जाए, मन वो घड़ा है जिसकी पेंदी में छेद है। आत्मा के

जाग्रत होने का एक ही उपाए है कि आत्मा अपने अंशी परमात्मा के शबद नाम का सिमरन ध्यान नितनियम से करें, आत्मा को आत्म शबद का भेद पूर्ण सतगुरू से ही प्राप्त होता है।

तभी तो पवित्र आत्माओं ने पूर्ण सतगुरू की महिमा यूं गायी है-

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द
गुरु मेरा पारब्रम्ह, गुरु भगवंत
एवं
गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवा महेश्वरायः
गुरु साक्षात् पार ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवै नमः
एवं
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाएं
बलिहारी गुरु आपनो गोविन्द दिओ बताए

पवित्र आत्माओं ने यूं भी कहा कि परमात्मा ने मनुष्य जीवन दिया, काल माया रूप अनंत इच्छाधारी मन भी दिया, परन्तु मेरे पूर्ण सतगुरू जी ने हमें मनुष्य जीवन का भेद बताया, विकारों तथा चंचल मन को वश में करने का उपाय बताया, परमात्मा से मिलाप के लिये आत्मा को जगाया, आत्मा को परमात्मा के तत्व नाम की कुंजी देकर आवागमन से छुड़ाया, आत्मा को आत्म शबद की भक्ति का भेद बताया, बलहारी जाऊँ ऐसे पूर्ण सतगुरू पर जिसने हमको हमसे मिलाया, मनुष्य जीवन का वास्तविक भेद बताया।

> **शान्ति चाहते हो तो स्वयं गम खाओ, स्वयं को समझाओ, स्वयं के अवगुण देखो।**

कर्त्तव्य से मुख ना मोड़ें

मनुष्य युगों-युगों से भूला-भटका है, काल के चंगुल में फंसा है मनुष्य को शान्ति की तलाश जन्मों-जन्मों से है फिर भी जिधर देखो, जहाँ देखो हर एक मनुष्य अशान्त है, बेचैन है, अनजाने भय से परेशान है। अपने ही सगे संबंधियों, अपने ही परिचितों से परेशान है। ज़िस माता ने जन्म दिया, पाल-पोस कर बड़ा किया, जिस मुख से माँ, मम्मी, अम्मा कहता है उसी मुख से अपनी ही माता का अपमान करते हैं। जिस पिता ने पढ़ा-लिखा कर इन्सान बनाया जिसने अपने पैरों पर खड़े होने का इल्म दिया, जिसने शादी कराकर अपना कर्तव्य निभाया, जिस मुख से बेटे और बहू ने बाबा, पापा, डैडी कहा, उसी मुख से अपशब्द कहते हैं, अपने अधिकारों की जंग करते हैं याद रखना जो आज बहू है कल उसे सास बनना है, जो आज पुत्र है कल उसे भी पिता बनना है ऐसी वाणी ऐसा व्यवहार करें जैसा आप अपने प्रति दूसरों से उम्मीद रखते हैं।

माता के मंदिर में जाते हैं, माता को चुनरी चढ़ाते हैं अच्छी बात है परन्तु जिस जननी ने जन्म दिया उसका तनिक भी ख्याल नहीं करते हैं अपशब्द कहने से नहीं चूकते, दान-दक्षिणा देकर दानवीर कहलाते हैं परन्तु जिसके नौ माह तक गर्भ में रहे, जिसने मल-मूत्र साफ किया, जिसकी गोद में पले -बड़े हुए, जिसने मधुर लोरी सुनाकर नींद कराई, अपनी छाती का दूध पिलाया उसी का दिल दुखाते हैं, चुभने वाले वचन कहते हैं। जिसने अपनी औलाद के अस्वस्थ होने पर रतजगा किया उसी माता को डॉक्टर को दिखाने के लिए वक्त ही नहीं मिलता, उल्टा ताना देते हैं, सलाह देते हैं कि ऐसा नहीं करो वैसा करो, श्रीराम जी के मंदिर जाएं, खूब श्रवण कुमार का पाठ पढ़ें परन्तु अपने पिताश्री का अपमान करें उनकी आज्ञा का पालन न करें, तो क्या राम जी प्रसन्न होंगे? नहीं भाई, नहीं। श्री राम जी ने तो अयोध्या के राज सिंहासन त्याग कर आज्ञा का

पालन करते हुए चौदह बरस का वनवास स्वीकार किया भ्राता भरतलाल ने जो त्याग किया, वह किसी से छुपा नहीं है। श्रीराम जी की मर्यादाएं सर्वविदित हैं सबको मालूम है। इन्सान यह विचार करता है कि मर्यादाओं का पालन श्री राम जी और भरतलाल करें, हमें क्या? हम श्री राम या भरत थोड़े ही हैं। जिस घर-परिवार में बड़ों का आदर नहीं होता, बड़ों की आज्ञा का पालन नहीं होता पूजने योग्य माता-पिता का अपमान होता हो, वहां सुख-शान्ति कैसे आ सकती है?

जहाँ आपस में प्रेम नहीं वहाँ खुशी कैसे आ सकती है? जहाँ प्रेम है वहीं परमात्मा है, जहाँ कलह है वहाँ कष्ट है, जहाँ सुमति है वहीं सम्पत्ति है, जहाँ अपने से बड़ों का आदर, प्रेम होता है वहाँ पर परमात्मा की अपार कृपा बरसती है, सुख की चाह है तो पहले सुख देना सीखें। हमें अपने में नम्रता-प्रेम को धारण करना है नम्रता, प्रेम अपने कर्त्तव्यों का सही पालन हमारे सच के मार्ग में सफलता दिलाती है। खुदी, नफरत, निन्दा, ईर्ष्या हमारे मार्ग की बाधाएं हैं इन बाधाओं को अपने से दूर रखेंगे तो हम हर क्षेत्र में सफलता पायेंगे। सभी को आदर देवें, सभी से मीठी कर्णप्रिय वाणी कहें अपने कर्त्तव्यों का पालन करें और सेवा, सत्संग, सिमरन-ध्यान द्वारा परमात्मा को पाये जो मानव जीवन का मूल उद्देश्य है। सच्चाई, कर्त्तव्य पालन वह पूंजी है जो कि थोड़ी सी तकलीफ, कष्ट के बाद जीवन भर आनन्द ही आनन्द है देती है। झूठ, निन्दा, ईर्ष्या, अहंकार वह कर्ज है जिसमें थोड़े से आनन्द के बाद जिन्दगी भर तकलीफ, कष्ट मिलता है।

अब भी मौका है जागो मेरे प्यारे भाई, बहनों! सबसे आत्मीय प्रेम करो, किसी भी कर्त्तव्य से मुख न मोड़ों, सदा सत्य की राह पर चलकर सत्य स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करें।

सभी अपने हैं

पूर्ण सतगुरू बाबा ईश्वरशाह साहिब जी फरमाते हैं कि हर इंसान भली भांति जानता है कि कर्मों का फल निश्चित है जैसा बीज बोते हैं वैसी ही फसल काटनी पड़ती है, जैसे दर्पण के सामने खड़े होते हैं वैसा ही प्रतिबिंब दिखाई देता है। फिर भी इंसान अपने कर्मों को सुधारता क्यों नहीं? क्रोध तथा अहंकार का त्याग क्यों नहीं करता, गम क्यों नहीं खाता? समझौते का नाम जिंदगी है। क्रोध से शरीर की अग्नि बढ़ती है जो स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है, अपशब्दों से बैर-विरोध तथा दुश्मनी बढ़ती है, अपने पराए हो जाते हैं। अहंकार से किए शुभ कर्मों का फल नाश होता है खुदी को मिटाने से ही खुदा मिलता है। गम खाने से अपने को छोटा कहलवाने से हर एक समस्या का समाधान होता है परन्तु कोई भी हार माने को तैयार ही नहीं इसलिए दुःखों से घिरा है, मैं मेरी में ही उलझा है।

।। हरजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।।
।। हारे ते हरि मिले, जीतन ते यम का द्वार।।

हर एक इंसान दूसरों से ऐसा व्यवहार करे जैसा वह अपने प्रति दूसरों से उम्मीद रखता है, जरूरत है अपने आपको सुधारने की, अपने ही कर्मों पर कड़ी नजर रखने की, क्योंकि हर एक जीव के अंतर में परमात्मा की अंश आत्मा समाई है जो मुझमें है वो सबमें है, सभी एक है। सभी की जरूरतें भी एक समान हैं, सभी इंसान पाँच तत्वों से बने हैं, प्रकृति सबके लिए एक समान गुण रखती है।

आप साहिबान फरमाते हैं कि यह सोझी आएगी। गुरू शब्द के द्वारा परमात्मा की भक्ति अर्थात सिमरन ध्यान करने से, भक्ति का मार्ग आदि काल से है, भक्ति से ही सोई रुह जाग्रत होती है, भक्ति से ही मुक्ति मिलती है। आवागमन का घेरा छूटता है, भक्ति से ही वह नूरानी नजर मिलती है। जिससे हर किसी में एक ही परमात्मा अंश आत्मा दिखाई देतीहै, सभी अपने ही अपने लगते हैं, नफरत घृणा छूट जाती है, न कोई बैरी न कोई बेगाना लगता है, सबसे प्रेम, सबसे भाईचारा, न कोई छोटा न कोई बड़ा, न किसी जाति का न किसी मजहब का भेद रह जाता है सभी अपने हैं सब एक हैं, सब एक हैं।

दीपोत्सव

हाजिरां हुजूर सतगुरू सांई ईश्वरशाह साहिब जी विश्व के समस्त मानव समाज को दीपावली की अनन्त शुभ कामनाएं दे रहे हैं। आप सभी का जीवन दीपों की तरह जगमग हो। दीपावली ज्योति उत्सव दीपोत्सव के रूप में मनाया जाता है तैसे ही सभी के अंधेरे रूपी अज्ञान का नाश हो। अन्तर निर्मल कर परम ज्ञान का प्रकाश हो। दीपावली पर्व पर खूब मिठाईयां खाते एवं बांटते हैं, तैसे ही सबसे मीठा मधुर व्यवहार हो, प्रेम हो, प्यार हो, दीपावली पर्व पर खूब आतिश बाजी (पटाखे) जलाते हैं तैसे ही हम अपने विषय विकारों को जलाएं। श्री राम की मर्यादाएं ग्रहण करें, माता-पिता गुरू की आज्ञाओं का पालन करें, माता सीता जैसे आदर्शों का पालन करें, भ्राता भरतलाल जैसा त्याग हो, श्री हनुमान जैसी निष्काम प्रेमा भक्ति, निःस्वार्थ सेवा का भाव हो, तभी सही मायने में हमारी दीपावली होगी।

दीपोत्सव अर्थात दीपावली परम प्रकाश, एकता, प्रेम का शुभ संदेश देकर हमें परम लाभ प्रदान करती है। दीपावली में हम आतिशबाजी जलाते हैं। यह हमें संदेश देता है कि हम अपने अन्तर के विकार, राग-द्वेष, निन्दा अहंकार रूपी गंदरफ को जलावे और दिपावली पर की जाने वाली सफाई हमें सन्देश देती है कि हम अपने अन्तर को निर्मल पाक कर सिमरन-ध्यान कर परमात्मा के रंग में रंग जाए।

मिठाईयां प्रतीक है कि हम मीठी वाणी वचन व्यवहार से रहें प्रकाश प्रतीक है कि हम अन्तर के तिमिर अन्धकार को मिटा परम प्रकाश की ओर अग्रसर हो, अन्तर का अंधकार मिटाकर अन्तर में उजाला लाएं। लक्ष्मी-गणेश-सरस्वती यह हमें संदेश देता है कि हम धन, वैभव, यश का सदउपयोग सद्बुद्धि से करें।

उत्सव मनाने का मूल उद्देश्य अन्तर में उत्साह उमंग और एकता-प्रेम, भाईचारे के साथ मिलुल कर खुशी और आनन्द को प्राप्त करें अपने

में उत्साह उमंग के साथ नवचेतना का संचार कर सके।

नाम महारस मीठा साधो, अन्तर सिमरो अन्तर आराधो।

परमात्मा का नाम रस ही सबसे मीठा रस है इसके सिमरन ध्यान से परम आनन्द की प्राप्ति होती है अन्तर तृप्त होता है।

दीया जले अगम का बिन बाती बिन तेल

वह अगम की ज्योत बिन बाती बिन तेल हर एक के अन्तर में जल रही है अन्तर में जो ज्योति है वह अखण्ड ज्योति है वह कभी नहीं बुझती यह ज्योति हर एक की दोनों आँखों के मध्य पीछे जल रही है। जब तक अन्तर ज्योति के दर्शन नहीं होंगे अन्दर से अज्ञानता का अंधेरा नहीं जाएगा। हम प्रतीकों को परम्परा मान उसी में उलझे रहेंगे। अब भी मौका है हम जागे-

समरथ हे आत्मा जागो तू जागो तू।
गुरू ज्ञान से जागो तू गुरू नाम से जागो तू।।

अन्तर का अज्ञान दूर कर अन्तर निर्मल करना ही असल दीपावली है। जब तक अन्तर में निर्मलता नहीं है अज्ञानता का अन्धेरा दूर नहीं हुआ तब तक हम असल दीपावली नहीं मना सकते।

गुरू गियान अंजनु सचु नेत्री पाइआ।
अंतरि चावणु अगिआनु अंधेरू गवाईया।।

श्रीगुरू अमरदास जी फरमाते हैं जब गुरमुखों के ज्ञान पर चलकर आप सच अर्थात शबद नाम का सुरया अपनी आँखों के अन्दर डालोगे तभी आपको सोझी आएगी मन के कहे अनुसार चलोगे तो अज्ञानता में भटकते रहोगे। गुरमुखों के आदेशानुसार शबदनाम के नित नियम के अभ्यास से ही तुम्हारे अन्तर अन्धकार का नाश होगा और परम प्रकाश के दीप तुम्हारे अन्तर में प्रकाशमान होंगे और वही सच्ची असल दीपावली है।

सच्चा धर्म सर्वव्यापी है

आप साहिबान फरमाते हैं कि आज नाना प्रकार की सांसारिक पदार्थों और सुख-सुविधाओं के होते हुए भी मनुष्य सुखी नजर नहीं आता। उसे अपने असल से या संसारी पदार्थों से संतोष ही नहीं होता, धार्मिक सिद्धांतों तथा सदाचार के नियमों की भी आज कोई कमी नहीं है। सब कुछ होते हुए भी मनुष्य के जीवन में अकेलापन, नीरसता बनी ही रहती है। वास्तव में यह आत्मा का अपने असल की ओर स्वाभाविक खिंचाव है।

आत्मा परमात्मा का अंश है और जब तक यह अपने मूल में नहीं समाती उसे स्थायी सुख, सच्ची शांति नहीं मिल सकती। सच्चा धर्म स्वार्थ नहीं परमार्थ है। सच्चा धर्म सर्वव्यापी है, हर एक मनुष्य के लिए बल्कि सारे संसार के लिए एक ही है।

आप साहिबान फरमाते हैं कि परमात्मा एक है, वह किसी विशेष जाति, धर्म का नहीं बल्कि सारे संसार का है और उसकी प्राप्ति भी सभी धर्मों का मूल उद्देश्य है। परमात्मा कहीं बाहर जंगलों, पहाड़ों में नहीं बल्कि इस नर नारायणी देही में ही समाया है। परमात्मा निर-आकार है, तभी तो सभी आकारों में समाया है। परमात्मा की अंश आत्मा अशरीरी है तभी तो सभी शरीरों में समायी है। एक आकार दूसरे आकार में तथा एक शरीर दूसरे शरीर में नहीं समा सकता, शरीर तो केवल गल्ले मिल सकते हैं, एक दूसरे में नहीं समा सकते, यह उस बेअन्त अपार अयोनिज सबके प्राणों का आधार अन्तरयामी परमात्मा है। परमपिता परमात्मा का ही गुण है कि अदृश्य होते हुए भी सभी प्राणियों में दृष्टिगोचर हो रहाहै। कोई जीव उसके नूर से जुदा नहीं है। निर-आकार परमात्मा अनहद धुन, शबद रूप में जर्रे-जर्रे, कण-कण में समाया है।

सतगुरू साँई नारायणशाह साहिब जी फरमाते हैं कि इस घोर

कलयुग में धर्म-कर्म का प्राणी पर बहुत ही कम असर पड़ता है। पूर्ण सन्त, पूर्ण शबद नाम का प्रचार करते हैं और ऐसे समय में नाम से सिवाय कोई सरल तथा शीघ्र असर करने वाला साधन नहीं है, जब तक उस धुनात्मक शबद के साथ आत्मा नहीं जुड़ती जीव का पूर्ण कल्याण किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है, शबद नाम का अभ्यासी ही सर्वोच्च आत्मिक मंडलों पर पहुंच सकता है। गोस्वामी तुलसी दास जी फरमाते हैं- "**कहो कहां लग राम बढ़ाई। राम न सकहिं नाम गुन गाई।।**" सब धर्मों का सार नाम है, सब मतों में नाम ही महान है, वह धुनात्मक शबद नाम मन, बुद्धि, इन्द्रियों से परे है। अदृश्य, अगोचर और अपार है। यह राम (शबद नाम) सर्वत्र रमा हुआ है। जब मनुष्य एकाग्रता के साथ शबद धुन अथवा नाम धुन के आनन्द का रस लेता है तो उसका ध्यान बाहर के पद, पदार्थों से अपने आप हटने लगता है। यह शबद नाम की भक्ति (सिमरन) से हर समय, हर देश, हर धर्म के लोग इससे एक जैसा लाभ उठा सकते हैं, यह उपदेश किसी विशेष समय, स्थान, जाति या धर्म तक सीमित नहीं है। यह सदा एक रहा है और सदा एक ही रहेगा, पूर्ण संतों का उपदेश विश्वव्यापी होता है। मानव जीवन अनमोल है, धर्म से जीना उसका मोल है।

।। हरे माधव दयाल की दया।।

आत्मा को आत्म शबद का भेद पूर्ण सतगुरु से ही प्राप्त होता है।

भक्त-भगवान

भक्त ने भगवान से पूछा- हे भगवन सारा जगत आप को खोज रहा है, हर एक घर में आपकी तस्वीर है, हर गली, मुहल्ले में आपके पूजाघर बने हैं तथा अन्य पवित्र स्थानों पर भी आपको खोज रहे हैं। हर कोई अपने अपने तरीके से आपको तलाश कर रहा है। हे भगवन हर कोई अशान्त है, बेचैन है, फिर भी आप मिलते क्यों नहीं? आप कहां हैं? आपको कहां खोजे? आप किस विध मिलेंगे? हे सृजनहार कृपया अपना भेद आप स्वयं ही बताने की दया करें।

भगवन बोले- हे भक्त मैं तो हर किसी के अंग संग हूँ सदा उसके साथ हूँ परछाई साथ छोड़ देती है परन्तु मैं तो हर एक जीव के संग साथ हूँ, लोग मुझे अंतरयामी कहते हैं लेकिन अपने अंतर में न खोजकर बाहर खोजते हैं। मेरी मर्जी के बिना एक पता भी नहीं हिलता इतना ज्ञान सभी को है, होनी ही होती है अनहोनी कभी नहीं होती। जो कुछ भी हो रहा है सब परमात्मा की मर्जी से हो रहा है यह सभी जानते हैं, परन्तु मानते नहीं है। फिर भी मेरी रजा में राजी नहीं रहते, मुझसे शिकायत करते हैं, मुझे सलाह देते हैं भगवान ने गरमी अधिक की है, ठंड ज्यादा है, ऐसे में रोग बढ़ेगे हे भक्त मुझसे गरमी, ठंड सहने की शक्ति नहीं मांगते, मेरे ही बनाए दिनों में मंगल, शनि को भारी मानते हैं तरह-तरह के भारी ग्रह जानकर उससे छुटकारे का उपाय करते हैं परन्तु अपने भारी कर्मों पर निगाह नहीं रखते अपने कर्म नहीं सुधारते सारा जगत अपने-अपने कर्मों के कारण दुःखी है। संसार के लोगों की अजीब स्थिति है कर्म-फल भोगते वक्त यह कहते हैं कि मैंने ऐसा कोई कर्म तो नहीं किया था। मैंने किसी का अहित या किसी का दिल तो नहीं दुःखाया था तो फिर कर्म-फल क्यों भोग रहा हूं सत्कर्म करते नहीं और मेरे न्याय पर संदेह करते हैं मुझे दोष देकर अपने ऊपर और पाप चढ़ा लेते हैं। मानव सत्कर्म करे तो उसे दुःख, तकलीफ, रोग क्यों होये। ये सभी तो उसके कर्मों के कारण आते हैं।

भगवन बोले- हे भक्त तुम जितनी मेरे पवित्र स्थानों पर भीड़

देख रहे हो, उनमें से मुझे पाने की चाह रखने वाले तो विरले है। नाम के लिए यहाँ आया है, किसी की कोई इच्छा पूर्ण हुई है, कोई इच्छा की चाह रखकर, कुछ माँगने आया है। हे भक्त इनका मुझपे विश्वास कम है, इच्छाओं की मांग रखते वक्त भेंट का कुछ भाग ही मुझे अर्पण करते हैं, बाकी भेंट इच्छा पूर्ण होने तक इन्तजार करते हैं। जबकि सब कुछ मेरा ही दिया हुआ है। मनुष्य का न अपना शरीर है न ही संसार के पदार्थ है। मेरी ही मुझे सौंपने में तरह-तरह के विचार करते हैं।

भगवन बोले- हे भक्त जो मनुष्य मुझे पाने की चाह रखतेहैं जिनके अंतर में मुझे पानेकी तड़प है मैं उन्हें अपने ही रूप सतपुरुष से भेंट करा देता हूँ, मेरा रूप पूर्ण सतपुरुष मेरे मिलने की युक्ति प्रदान करता है। मेरे अंतर में प्रकट होने की नाम रूपी भक्ति की कुंजी उस भक्त को देता है। मैं तो केवल अंतर की साधना परम शबद नाम के सिमरन से अंतर में अनुभव होता हूँ। हे भक्त मैंने राम रूप में माता शबरी को भक्ति का स्पष्ट संदेश दिया, प्रथम भक्ति संतन कर संगा और यह भी कहा कि मुझसे अधिक संत कर लेखा, मैंने कृष्ण रूप में सखा अर्जुन को भी अपना भेद यूं बताया कि मै अक्षर ब्रम्ह अर्थात शबद रूप हूँ मेरा भेद प्रज्ञावान पुरुष अर्थात सतपुरुष ही देने में समर्थवान है अब कोई मनुष्य यह कहे कि राम ने संदेश माता शबरी को कृष्ण जी ने संदेश अर्जुन को दिया था। हमें क्या? हम क्यों सतपुरुषों की तलाश करें? हे भक्त इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। मनुष्य को वास्तव में मुझे पाने की चाह है अगर वह शान्ति चाहता है तो अक्षर ब्रम्ह शबद का भेद पाने मेरे रूप पूर्ण सतपुरुष की शरण में जाए, मेरे परम शबद की साधना करके मुझे अपने ही शरीर में अनुभव कर सकता है। मनुष्य शरीर में ही मेरा चैतन्य अंश आत्मा के रूप में वास है। मनुष्य शरीर के पाँचों तत्वों का मैं ही रचनाकार हूँ, मनुष्य का अपने शरीर में अपना कुछ भी नहीं है मैं ही चैतन्य आत्मा के रूप में उसके प्राणों का आधार हूँ, मेरी चैतन्य अंश-आत्मा ही मेरा सिमरन करती है, मुझे याद करती है। आत्मा के एक पल, एक स्वांस के सिमरन मात्र से मैं अनुभव होने लगता हूँ मैं अति निकट से निकट हूँ मैं सबके अन्तर में बसा हूँ, जिसने मुझे खोजा उसने अपने ही अन्तर में मुझे पाया है।

मीठी वाणी प्रेम है

हर बंदे की पहचान ही वाणी है
जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो

मीठी वाणी औषधि है : तीखी वाणी तीर

मीठी वाणी अमृत है : तीखी वाणी जहर

मीठी वाणी शीतल है : तीखी वाणी अग्नी

मीठी वाणी प्रेम है : तीखी वाणी बैर

मीठी वाणी शान्ति है : तीखी वाणी शोर

मीठी वाणी निरोग है : तीखी वाणी रोग

मीठी वाणी विकास है : तीखी वाणी विनाश

मीठी वाणी कोयल है : तीखी वाणी कांग

मीठी वाणी बहार है : तीखी वाणी उदास

भजन

तर्ज - सज रही डोली मेरी माँ

स्थाई - रहिमत की होती है बरसात, तेरे द्वारे में
अमृत यहाँ बरसे दिन रात, तेरे द्वारे में

① सतगुरू तेरे द्वारे की, महिमा है निराली
पूरी हो मुरादें, न जाये कोई खाली
भरते हैं सभी के भण्डारे, तेरे द्वारे में.....

② प्यार का जो दीपक, है तुमने जलाया
सबके दिलों से अंधेरा मिटाया
रौशन हुआ हर दिल द्वार, तेरे द्वारे में.....

③ नाम का उजाला, है जग में फैलाया
सोते हुओं को, है तुमने जगाया
शबद का मिला है प्यारा नाम, तेरे द्वारे में.....

④ मस्ती में झूमें ये, तेरे सेवादारी
तुमने बनाया सबका, जीवन सुखदाई
महिमा गायें तेरी सुबह शाम, तेरे द्वारे में ....

भजन

तर्ज - गुरू बाबा तुहिंजे दर तां.....

स्थाई - सतगुरू माधवशाह की वर्सी का मेला लगता निराला है,
नाचे गाए सभी मिलके, सतगुरू दीन दयाला है।
सतगुरू माधवशाह.......

① सजे सारा यह माधव नगर, देखो आनन्द है सबके घर।
झूमें सब प्यार में प्यारे, जग में नहीं है ऐसा दर।
नाचें गाए सभी मिलके, सतगुरू दीन दयाला है।
सतगुरू माधवशाह.....

② पल में बनते भाग्य यहां, ऐसा सतगुरू का द्वारा है।
दया का सागर बहता यहां, झुके संसार सारा है।
नाचें गाए सभी मिलके, सतगुरू दीन दयाला है।
सतगुरू माधवशाह.....

③ चले भण्डारे दिन और रात, पाए प्रेमी प्यार परसाद।
झोली भरती है सबकी, पूरी होती सबकी मुराद।
नाचें गाए सभी मिलके, सतगुरू दीन दयाला है।
सतगुरू माधवशाह.....

④ शबद का सबको दान मिले, मन का सूखा बाग खिले ।
शबद से ही बस सुरती मिले, ऐसा सतगुरू से ज्ञान मिले।
नाचें गाए सभी मिलके, सतगुरू दीन दयाला है।
सतगुरू माधवशाह.....

।। हरे माधव दयाल की दया ।।



बाबा माधवशाह चिकित्सालय



बाबा माधवशाह प्राकृतिक चिकित्सालय



बाबा माधवशाह उद्यान

॥ हरे माधव दयाल की दया ॥



हाजिरा हुजूर सतगुरू साँई ईश्वरशाह साहिब जी

हरे माधव संस्कार

हरे माधव दरबार, माधवनगर, कटनी (म.प्र.)

फोन नं. - 07622 246411

www.haremadhav.com